जनवरी की कुछ यादें

रश्मि पालीवाल

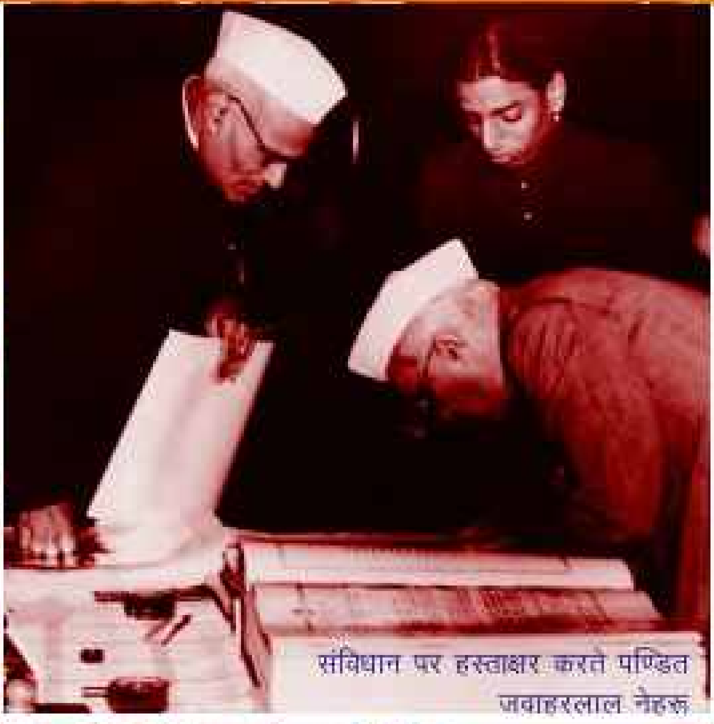

संविधान पर हस्ताक्षर करते पण्डित जवाहरलाल नेहरू

यह सर्द महीना क्या मायने रखता है मेरे लिए? इतिहास की कौन-सी घटनाओं की याद दिलाता है मुझे? मैं इस बारे में सोचती हूँ तो 30 जनवरी 1948 की तारीख से आगे या पीछे अपना ध्यान बढ़ा नहीं पाती हूँ। इस दिन दिल्ली हाउस के प्रांगण में प्रार्थना सभा की ओर बढ़ रहे थे गांधीजी। उन्हें नमस्कार करने की मुद्रा में झुके थे नाथूराम गोडसे, अपने हाथों में पिस्तौल छिपाए। सीधे सीने में दागी गई तीन गोलियों का वार झेलते हुए "हे राम" कहते-कहते गांधीजी ढेर हो गए। देश को आज़ाद हुए अभी साढ़े पाँच माह ही बीते थे और उस लक्ष्य के लिए अथक प्रयास करने वाली हस्ती को मिटा दिया गया। वह हस्ती जो गुहार कर रही थी कि इस देश में हिन्दू, सिख और मुसलमान सब प्रेम, शान्ति व अपनेपन के साथ जिएँ, वह हस्ती जो भारत-पाकिस्तान के विभाजन के दौरान पैदा हुई नफरत व हिंसा को रोकने व मिटाने के लिए पुकारती रही, मिटा दी गई।

अगले दो साल देश के लिए संविधान तैयार करने की उधेड़बुन में लगे। दो साल बाद इसी महीने की 26 तारीख को तैयार हुआ संविधान राष्ट्र को समर्पित हुआ व लागू हुआ। यही दिन क्यों चुना गया इसका भी एक कारण है। 26 जनवरी 1929 ही वह दिन था जब कॉंग्रेस ने ऐलान किया था कि यह देश के "पूर्ण स्वराज" के लिए संघर्ष छेड़ेगी व ब्रिटिश सरकार के साथ बातचीत व सहयोग का प्रयास बन्द कर देगी। इसी दिन लाहौर में जवाहरलाल नेहरू ने तिरंगा झण्डा फैराते हुए पूर्ण स्वराज का संकल्प पढ़ा था। लाहौर के अलावा देश के कई स्थानों पर सैकड़ों लोगों ने शान्तिपूर्ण जुलूस निकाले और पूर्ण स्वराज का संकल्प पढ़ा। तब से 26 जनवरी "पूर्ण स्वराज दिवस" के रूप में मनाया जाने लगा।

जब छोटी थी तो 15 अगस्त और 26 जनवरी की घटनाओं के फर्क को समझ नहीं पाती थी। एक स्वतंत्रता दिवस है और एक गणतंत्र दिवस। मन में सवाल रहता कि जब आज़ाद हुए तब गणतंत्र ही तो बने थे। किसी को हमने राजा थोड़ी-न बनाया था।

15 अगस्त 1947 और 26 जनवरी 1950 के बीच के समय में हम एक देश के रूप में क्या थे? क्या हैसियत थी हमारी सरकार की जिसके प्रधान मंत्री जवाहरलाल नेहरू थे और राष्ट्रपति राजेन्द्र प्रसाद? आगे की कक्षाओं में पता चला कि कोई राजनैतिक लड़ाई कितनी लम्बी, जटिल और धीमी होती है। और कितना दर्द व तनाव लिए होती है। इसी की याद दिलाता है मुझे जनवरी का महीना।

जनवरी का एक फूल - कुसुम
(फोटो: आमोद कारखानिस)